E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

# क्रांतिकारी आंदोलन में साहित्य की भूमिका: एक ऐतिहासिक विश्लेषण

**साकिर हुसैन**
शोध छात्र इतिहास विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र हरियाणा

**Paper Received date**
05/01/2026
**Paper date Publishing Date**
10/01/2026
**DOI**
https://doi.org/10.5281/zenodo.18303388

IMPACT FACTOR
5.924

क्रांतिकारी अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए साहित्य प्रकाशन का सहारा लिया करते थे, ताकि वे अपने विचारों एवं कार्यक्रमों से लोगों को अवगत करा सके तथा भारतीय युवाओं को अपने संगठन तथा कार्यक्रमों से जोड़ सके।यह ध्यान देने योग्य है कि कलकत्ता अनुशीलन समिति के पास चार हजार पुस्तकों की लाइब्रेरी थी। इन पुस्तकों के माध्यम से क्रांतिकारी जनता में देश प्रेम की भावना, आत्म-बलिदान का जज्बा तथा गुलामी के प्रति नफरत, अतीत और मुक्ति संघर्षों के अनुभवों से आम जनता को परिचित कराने का काम करते थे।'मैन्युअल आफ एक्सप्लोसिव' नामक पुस्तक ने क्रांतिकारियों के हाथों में विस्फोटक पदार्थ जैसे शक्तिशाली सशस्त्र सौंपने की वकालत की।इस पुस्तक में ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र क्रांति की योजनाओं और गतिविधियों को संचालित करने के तरीकों का उल्लेख मिलता है। इसके अलावा, इसमें उन रणनीतियों का भी उल्लेख है, जिसके माध्यम से छापामार कार्रवाई के दौरान पुलिस से बचने में मदद मिलती थी और इसमें भूमिगत नेटवर्क, गुप्त स्थानों का प्रयोग तथा गोपनीयता बनाए रखने की विधियों पर विशेष ध्यान दिया गया।

**मुख्य शब्द:** साम्राज्यवाद, क्रांतिकारी, शोषणकारी, साहित्य, विचारधारा, राष्ट्रवाद

क्रांतिकारीपर्चों, समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश शासन के शोषणकारी,भ्रष्टाचारी तथा असमानता वाले रवैया के प्रति लोगों को जागरूक करने में विश्वास करते थे,ताकि भारतीय जनता को एकजुट करके

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध खड़ाकिया जा सके। इसके अतिरिक्त,वेसमाज के दबे-कुचले लोगों को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक करते थे तथा उन्हें अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते थे।उन्होंने 'आमादेर राजाके? अर्थात् हमारा राजा कौन है? नामकपर्चे में ब्रिटेन केभारत पर शासन के अधिकार को चुनौती दी।प्रीतिलता वाडेकरके'सोनार बांग्ला' अथवा सुनहरा बंगाल पर्चे में लोगों से आह्वान कियाकि "वे एक हो कर उड़ जाए, फिरंगी बुलबुलअथवा ब्रिटिशहुकूमत का घोंसला नोंच डालें और गंगा में विसर्जित कर दें।"इसके अलावा, लाला हरदयाल ने 'शाबाश' और 'बम का दर्शन' नामक पर्चे प्रकाशित किए। 'शाबाश' नामक पर्चा वायसराय लॉर्ड हार्डिंग पर दिल्ली में फेंके गये बम की घटना केपश्चात् निकाला गया, ताकि अंग्रेजी अफसरों केमन में डर पैदा किया जा सके।इसपर्चे पर बड़े अक्षरों में लिखा होता था, मूल्य-'एक अंग्रेज का सिर।"गुलामी का जहर और गुलाम की आत्मा' नामक पर्चे में लाला हरदयाल ने ब्रिटिश शासन के द्वारा लोगों के मन में बसाई गई गुलामी की भावना के बारे में लिखा।'नवेंजमाने दे नवें आदर्श'तथा 'रूसीगदरों की दास्तान'आदिपर्चों ने जनता के बीच क्रांतिकारी विचारों एवं सिद्धांतों के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बंकिम चंद्र चटर्जी ने अपनी रचना 'वंदेमातरम्' तथा'दुर्गोत्सव' में भारत को भारत माता के नाम से संबोधित किया। माता के नाम के संबोधन ने जनता में राष्ट्रीय भावना को जागृत किया। उनका मानना था कि भारत माता प्रत्येक भारतवासी की मां है, चाहे वह किसी जाति अथवा धर्म से संबंध ही क्यों न रखता हो। मां की इस छवि ने प्रत्येक भारतीय को अंग्रेजी हुकूमत से लड़ने की शक्ति और परस्पर एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया।इसकेअलावा, अरविंद घोष, तिलक के समान बंगाल में क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणा के स्रोत बनकर उभरे। उनका मानना था कि राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि राष्ट्रवाद एक धर्म है, जो ईश्वर से उत्पन्न हुआ है।अरविंद घोष'भवानी मंदिर' नामक पुस्तक पर 'आनंदमठ' का स्पष्ट प्रभावथा।'आनंदमठ'के संबंध में उनका मानना था कि "इस पुस्तक ने हमको एक नये भारत की सृष्टि करने वाला मंत्र 'वंदे मातरम' दिया।"उनकी'भवानी मंदिर' से बंगाल के क्रांतिकारियों को प्रेरणा मिलती थी। क्रांतिकारी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भवानी के नाम पर शपथ लेने में विश्वास करते थें।यहध्यान देने योग्य है कि इस पुस्तक के संबंध में सेडिशन कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि यह पुस्तक राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धार्मिक आदर्श के प्रयोग एकमहत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

करतीथी।उल्लेखनीयहै कि अरविंद घोष ने 'भवानी मंदिर' में भवानी को देवीदुर्गा के अवतारस्वरूप प्रस्तुत किया।यहगौर करने लायक है कि 'तुलजा भवानी देवी'शिवाजी की कुलदेवी थीऔर शिवाजी की तलवार का नाम भी भवानीनामही था।परिणामस्वरूप,भवानी नाम से क्रांतिकारियों को प्रेरणा मिलती थी।क्योंकि क्रांतिकारी भवानी देवी को शक्ति, साहस तथा विजय की देवी मानते थे। इसके अलावा, वे भवानी देवी को भारतीय संस्कृति और आत्म सम्मान का प्रतीक मानते थें।क्रांतिकारी, भवानी पूजा के माध्यम से नवयुवाओं को संगठनों से जोड़ने का काम करते थे, ताकि वे एकजुट होकर ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद कर सके।इसप्रकार, भवानी देवी ने क्रांतिकारी आंदोलन को गति प्रदान की और लोगों में देशभक्ति की भावना को जागने का काम किया।

अरविंद घोष के अखबार 'कर्मयोगी' के मुख्य पृष्ठ पर रथ में बैठे अर्जुन और सारथी के रूप में कृष्ण का चित्र छपता था। इससे जनता को लामबंद करने में सहयोग मिलता था। यहध्यान देने योग्य है कि, जहां एक तरफ धार्मिक जागरण ने हिंदू पुनरुत्थानवाद को मदद पहुंचायी और राष्ट्रीय परंपराओं के प्रति सम्मान की भावना को बल प्रदान किया, तोवही दूसरी ओर इसने लोगों को आपस में बांटने का काम भी किया।

क्रांतिकारियों के उग्र विचारों के निर्माण तथा प्रचारमें बिपिन चंद्रपाल कायोगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने 'न्यू इंडिया''वंदेमातरम' और 'स्वराज' नामक विभिन्न समाचार पत्रों के माध्यम से जन-जागृति लाने में महत्वपूर्ण भूमिकानिभाई।सेडिशन कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार उन्होंने मद्रास प्रेसीडेंसी में क्रांतिकारी भावनाओं का सूत्रपात किया तथा वहां स्वराज और बहिष्कार के सिद्धांतों पर भाषण दिये।यहध्यान देने योग्य है कि बिपिन चंद्रपाल ने सार्वजनिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंसक मार्ग की वकालत नहीं की,लेकिन उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से अपने भाषणों के जरिये क्रांतिकारीविचार का प्रचार-प्रसारअवश्य किया। 27 मई, 1906 में 'वंदेमातरम्' के अंक में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार बिपिन चंद्रपाल ने एक सभा मेंलोगों से प्रत्येक अमावस्या की रात को काली की पूजा' धूमधाम से मनाने तथा 101 सफेद बकरों (यानी अंग्रेजी दुश्मन) की बलि दिये जाने काआह्वान किया।लाला लाजपतरायने भी पंजाब में क्रांतिकारी विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।वे संघर्ष एवं सत्याग्रह की अवधारणा में विश्वास करते थे। उन पर मैजिनी, गैरीबाल्डी तथा आर्य समाज के विचारों का गहरा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

IEARJ International Educational Applied Research Journal

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रभाव था।उन्होंने मैजिनी और गैरीबाल्डी की जीवनी लिखी, जिन्हें पढ़कर नवयुवकोंको अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ सशस्त्र क्रांति की प्रेरणा मिलती थी।

बारींद्र कुमार घोष ने 1906 में 'युगांतर' पत्रिका को भूपेंद्रनाथ दत्त और अविनाश भट्टाचार्य की सहायता से चलाया।'युगांतर' पत्रिका के माध्यम से क्रांतिकारी विचारधारा को बढ़ाने का काम किया।इसपत्रिकाके मुख्य पृष्ठ पर छपने वाला सूत्र वाक्य को गीता से लिया गया था। बारींद्र कुमार घोषइसमें गीता से विस्तृत उद्धरण देकर लोगों को आश्वस्त करते थे कि घृणित ब्रिटिश राज का अंत निश्चित है।इसपत्रिका में "स्वतंत्रता प्रत्येक राष्ट्र का जन्मसिद्ध अधिकार है"नामसे लेखछपताथा, जोतिलक कीविचारधारा से मेल खाता था। ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए इस पत्रिका ने उग्र राष्ट्रवाद तथा हिंसक साधनों की वकालत की।इसके अलावा, इसने क्रांतिकारी पाठकों से हथियार जुटाकररूसी ढंग के सशस्त्र विद्रोहएवं छापा-मार युद्ध प्रणाली की वकालत भीकी। 5 मई1907 के अंक में युगांतर में अंग्रेजों को डोम अथवा असुर की संज्ञा दी।9 जून1907 के लेख में लोगों को हिंसा के लिए प्रेरित करने वाले लेख भी छापे।कालांतर में युगांतर की वाणी और उग्र होती चली गई।इसने 28 दिसंबर 1907 के लेख में छापा कि"अपने धर्म के विनाश करने वालों को मारो उनको मारो, जो तुम्हारा कर्तव्य पथ और धर्म में बाधा डालते हैं, इस बात का ख्याल किये बिना कि वे अमीर है या गरीब, जमींदार है या राजा या सरकारी अधिकारी है या सम्राट।"इसमें छापने वाले क्रांतिकारीलेखोंमें यहआह्वान किया कि "हमें केवल राष्ट्रद्रोहियों, स्वदेशी आंदोलन के विरोधियों, सरकारीगवाहों, शराबियों, निर्धनों और निर्बलों के उत्पीड़कों को, राष्ट्र के आर्थिक शोषकों, कंजूस महाजनों के घरों अथवा संपत्तियों को लूटना चाहिये।"यहबात ध्यान देने योग्य है कि क्रांतिकारियों ने डकैती डालते समय महिलाओं, बच्चों, निर्बल और असहाय व्यक्तियों को कभी भी हानि नहीं पहुंचने की शपथ को स्वीकार किया।सखाराम गणेश देउस्कर की 'देशेर कथा'तथा'शिखेरबलिदान' नामक पुस्तक मातृभूमि उपासकों अथवा क्रांतिकारियोंका एकमात्र सहारा बनकर उत्पीड़न को के विरुद्ध सिक्खों के बलिदान की चर्चा करती थी।'मुक्तिकौन पथे'अथवा 'मुक्ति की राहकिधर है' जो युगांतर के लेखों पर एक संग्रह था।इसमें क्रांतिकारियों ने गुप्त समितियों की उपयोगिता और रूसी क्रांतिकारियों के तरीकों के अनुसरण पर बल दियागया। उन्होंने कांग्रेस के आदर्शों की संकीर्णता तथा छिछलेपन की आलोचना की।'बर्तमान रणनीति' नामक पुस्तक में अविनाश चंद्र भट्टाचार्य ने

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

घोषित किया कि “विनाश प्राकृतिक है और इसलिए युद्ध भी प्राकृतिक है, जब शरीर का कोई अंग सड़ जाए तो उसे शल्यक्रिया के औजारों के जरिये काट देना ही अच्छा है, अन्यथा वहघाव में नासूर हो जाएगा और घाव संपूर्ण शरीर को नष्ट कर देगा।““दुर्व्यसन, उत्पीड़न, निर्भरता आदि भी राष्ट्र के शरीर के नासूर हैं।“ आगे उनका कहा था कि, जब किसी अन्य साधन के माध्यम से उत्पीड़न को रोक न जा सके तो युद्ध अपरिहार्य हो जाता है।इस प्रकार के वक्तव्यों से भारतीय नवयुवकों केमनमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ आक्रोश पैदा कियातथा क्रांतिकारी वैचारिकनींवतैयार की।इसके अलावा, वी. डी. सावरकर की ‘द इण्डियन वारआफ इंडिपेंडेंस 1857’नामक पुस्तक से क्रांतिकारियों को विशेष प्रकार की प्रेरणा मिलती थी।

गदर क्रांतिकारियों ने साप्ताहिक ‘गदर’ नामक समाचार पत्र के माध्यम से विदेशी धरती से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद किया। गदर अखबार की शुरुआत 1 नवंबर 1913 में सैन फ्रांसिस्को से हुई। इसके प्रकाशन में सोहन सिंह भकना एवं लाला हरदयाल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गदर अखबार सैन फ्रांसिस्कोमें स्थित युगांतर आश्रमसे पंजाबी, हिंदी, उर्दू, पश्तो तथा अंग्रेजी भाषा में निकालता था। करतार सिंह सराभा ने गदर अखबार की प्रतियां भारत, कनाडा, मलेशिया, बर्मा और अन्य देशों में प्रवासी भारतीयों तक पहुंचाने का काम किया। इसका उद्देश्य विदेश में बसे भारतीयों को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ना था। गदर अखबार ने भारतीय नवयुवकों को क्रांति की शिक्षा तथा आम जनता को राजनीतिक शिक्षा देने के साथ-साथ ब्रिटिश शासन के अधीन रहने वाले भारतीयों के गिरते मनोबल को उठाने का काम किया। इसअखबार की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि इसमें जनता के मुद्दों तथा ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आलोचना बिल्कुल सरल भाषा में प्रस्तुत की जाती थी, जिसे आम जनता आसानी से समझ सकती थी। इसके अलावा, गदर अखबार में प्रकाशित लेखों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोगों की राष्ट्र प्रेम के प्रति उत्तेजित भावनाओं को बढ़ाने का काम किया तथा लोगों से अंग्रेजों की हत्या करने तथा क्रांति करने की अपील की। ‘गदर’ अखबार में संग्रहीत की गई ‘गदर दी गूंज’ नामक कविताओं ने भारतीयों के मन में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ आक्रोश उत्पन्न करने का काम किया। इसके अलावा, ‘ऐलान-ए-जंग’ नामक पर्चे में भारत की गरीबी का वर्णन, भारत के उत्पादों के निष्कासन एवं युद्ध में भारतीयों को लड़ने-मरने के लिए आगे करने, जबकि ब्रिटिश को पीछे रखने इत्यादि का जिक्र

गया। यहबात गौर करने लायक है कि इस पर्चे ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध हिंदू-मुस्लिम एकतापर भीजोर दिया।

## सन्दर्भ सूची


1. सुमित सरकार,***द स्वदेशी मूवमेंट इन बंगाल 1903-1908,*** नईदिल्ली,1973
2. ***होम पॉलिटिकल ए, प्रोसीडिंग्स, फाइल संख्या 112-150,*** मई, 1908; ***होम पॉलीटिकल-डी, प्रोसीडिंग्स, फाइल संख्या 17,***मई, 1908
3. हरीश के पुरी, ***गदर मूवमेंट: ए शॉर्ट हिस्ट्री,*** नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2011
4. ***होम पॉलिटिकल, प्रोसिडिंग ए,*** फाइल संख्या 89-94, मार्च 1909, ***होम डिपार्टमेंट, पब्लिक प्रोसीडिंग्स,*** फाइल संख्या फाइल संख्या 169-186, जून 1906
5. सोहन सिंह जोश, ***ट्रेजेडी आफ कामागाटामारू,*** पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिशीगन, 1975
6. एफ. सीआईसेमान्गरएवं जे. स्लैटरी,***'एन अकाउंट ऑफ़ द गदर कंस्पायरेसी' 1913-15,*** अर्चना पब्लिकेशन,मेरठ, 1919
7. ***विश्वनाथ मुखर्जी का लेख वंदेमातरम् शताब्दी समारोह (1875-1976) स्मारिका,***वाराणसी, 1976
8. श्री अरविंद घोष, ***'स्पीचिज; द कंप्लीट वर्कर्स आफ श्री अरविंदो, वंदे मातरम पॉलिटिकल, पोलिटिकल राइटिंग्स एण्ड स्पीचिज: 1890-1908, वॉल्यूम 6-7***
9. *वंदेमातरम,* 26 अप्रैल, 1907
10. ***सेडिशन कमिटी रिपोर्ट, 1918,***

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal


11. बिपिन चंद्रपाल, ***स्पिरिट ऑफ़ इंडियन नेशनलिज्म,*** द हिंदी नेशनलिस्ट एजेंसी, लंदन, 1910

12. वी. पी. एस. रघुवंशी, ***इंडियन नेशनलिस्ट मूवमेंट एंड थॉट,***आगरा, 1951; एस. इरफान हबीब, ***बहरों को सुनने के लिए,***राहुल फाउंडेशन, लखनऊ, 2008

13. अमलेन्द्रप्रसाद मुखर्जी, ***सोशल एंड पॉलीटिकल आईडियाज आफ बिपिन चंद्रपाल,***

14. ***गुप्तचर निर्देशक की दैनिक रिपोर्ट,*** 31 मई, 1907,***होम पॉलिटिकल- बी, प्रोसीडिंग्स, फाइल संख्या 39-177,*** जुलाई 1907

15. विजय चंद्र जोशी (संपादित),***लाला लाजपत राय राइटिंग एण्ड स्पीचिज***

16. उमा मुखर्जीऔर हरिदास मुखर्जी, ***स्वदेशी आंदोलन और बंगलारनवजुगा,***कलकत्ता,1961

17. ए. सी. गुप्ता, ***स्टडीज इन द बंगाल रेनेसां (1907-1917),***यूनिस्टार बुक्स, कलकत्ता, 1958

18. ***युगांतर,*** 5 मई, 9 जून, 28 दिसम्बर 1907,

19. ***होमपॉलिटिकल ए, प्रोसीडिंग्सक्रमांक 126-129,***जून, 1908

20. ***होमपॉलिटिकल- बी,प्रोसीडिंग्स, फाइल संख्या111-118,***जनवरी,1908

21. जेराल्ड.कैम्पवेल. केर, ***पॉलीटिकलट्रबलइन इंडिया,***फेमिसॉइल पब्लिशर्स, दिल्ली, 1973

22. राधा गुप्त, ***स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी नायक,*** जैन बुक्स, वाराणसी, 1990

23. हरमीत सिंह, ***गदर पार्टी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम,***पंजाबी विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 1992

24. मोहनलाल धवन,***क्रांतिकारी आंदोलन और गदर पार्टी का योगदान,***इंडिया प्रेस, पटियाला, 1980

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

25. ताराचंद, ***भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन काइतिहास खण्ड 3***

26. बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, ***वंदे मातरम्*** 1882

27. अमरजीत सिंह, ***रिवॉल्यूशनरीज एंड द ब्रिटिश राज,*** कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 1924

28. गुरुचरन सिंह सहिंसरा, ***गदर पार्टी का इतिहास,*** **प्रथम भाग 1912-17,** देश भगत यादगार कमेटी,जालंधर, 2013

29. भैरव लाल दास, ***गदर आंदोलन का इतिहास,***प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020

30. ताराचंद, ***भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन काइतिहास खण्ड 3***

31. बिपिन चंद्र पाल, ***न्यू इंडिया,***कलकत्ता, 1906

32. प्रकाश चंद्र, ***भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी आंदोलन,*** नेशनल पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 1978

33. ***होम पॉलिटिकल एप्रोसीडिंग्स,*** फाइल संख्या135-147, मई, 1909; ***होम डिपार्टमेंट पॉलिटिकल-ए, प्रोसीडिंग्स,*** *फाइल संख्या 21-67, अप्रैल 1911,*

34. जेम्स कैंपबेल केर, ***पॉलिटिकल ट्रबल इन इंडिया 1907-1917,***

35. राधा गुप्त, ***स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी नायक,*** जैन बुक्स, वाराणसी, से 1990,

36. सावरकर, ***द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस1857,*** बंबई,1909,

37. चंद्रशेखर, ***क्रांतिकारी आंदोलन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम,*** पीपुल्स पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 1975

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

38. हरमीत सिंह, ***गदर पार्टी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम,*** पंजाबी विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 1992